उस चीज़ की तलाश

यह बता देना शायद आवश्यक या आसान नहीं कि उन दोनों में से पहले किसने और कैसे उस चीज़ का अभाव महसूस किया और उसकी तलाश शुरू कर दी संभव है कि अभाव का एहसास और तलाश की शुरुआत एकदम एकतरफ़ा कभी भी न रही हो लेकिन इसमें कोई शक नहीं कि तलाश के पहले दौर में वे एक दूसरे की नज़र बचाकर अलग अलग उस चीज़ के लिए बेचैन रहे जिससे यह अंदाज़ा लगा लेना शायद ग़लत न हो कि शुरू के उस दौर में उन्हें उस चीज़ के गुम हो जाने का ग़म उतना ही था जितना कि उसे गुम कर डालने के लिए एक दूसरे द्वारा दोषी ठहराये जाने का भय वैसे अंदाज़े और इससे उलट भी लगाये जा सकते हैं मसलन यह कि उनमें से हर एक दूसरे पर साबित कर दिखाना चाहता था कि वह चीज़ गुम किसी की भी ग़फ़लत से क्यों न हुई हो उसे फिर से खोज निकालने का ज़रूरी और मुश्किल काम उसी ने किया था या यह कि वे अपनी अपनी तलाश को एक दूसरे से ख़ुफ़िया इसलिए रख रहे थे ताकि मिल जाने पर चुपचाप उस चीज़ को दबाकर अपने पास रख सकें या उसकी अपनी जगह पर टिका दें बहरहाल तलाश का वह पहला दौर ख़ुफ़िया तो था लेकिन ख़ौफ़नाक नहीं था कि उन्हें यक़ीन था कि देर सवेर वह चीज़ उन्हें मिल ही जायेगी सो जब उनमें से एक घर में न होता किसी काम या सोच में डूबा हुआ होता अपने कमरे में बंद रो या सो रहा होता बीमार या बदहवास होता तो दूसरा दबे पांव उस चीज़ को इधर उधर टटोलता रहता लेकिन ज़ाहिर है कि तलाश का यह तरीक़ा अधूरा और अधैर्यजनक था कि आमतौर पर औरत किसी भी गुमशुदा चीज़ की तलाश में सारा घर उखाड़ मारती और उस वक़्त तक चैन लेती न लेने देती जब तक वह चीज़ उसे मिल न जाती या उसके बदले में वैसी ही कोई नयी चीज़ और आदमी की आदत थी कि किसी भी चीज़ के गुम होते ही उसके होशोहवास भी साथ गुम हो जाते और वह उस वक़्त तक सारा घर सर पर उठाये रहता जब तक खोयी हुई चीज़ बरामद न हो जाती या उसके मिलने की उम्मीद मर न जाती और अब

वे दोनों अपनी अपनी आदत के ख़िलाफ़ ख़ामोशी से उस चीज़ को ढूंढ़ रहे थे उनकी छटपटाहट का अंदाज़ा लगाया जा सकता है लेकिन धीरे धीरे उनकी आपसी एहतियात कम होती गयी अब आदमी अगर बाहर होता तो औरत सारा सामान उलट पलट कर रख देती और कोशिश करती कि उसकी वापसी से पहले उसे फिर से संवार दे औरत कहीं गयी होती तो आदमी मकान का कोना कोना कुरेद मारता और कोशिश करने पर भी उसकी वापसी से पहले सामान को समेट न पाता और अब दोनों कोशिश करते कि दूसरा ज़्यादा देर तक घर से बाहर रहे औरत आदमी को बाहर भेजने के बहाने तलाशती रहती आदमी औरत को कभी बीमार होने का बहाना बना उनमें से एक घर बैठ जाता तो दूसरा मन ही मन उस बहाने पर झुनझुनाता रहता कभी रात को उनमें से एक दूसरे को सोया समझ उठकर अंधेरे में धीमे धीमे उस चीज़ की तलाश करने लगता कोई आहट हो जाती तो प्यास या पेशाब का बहाना पेश कर देता अलग अलग बिस्तर में पड़े वे रात भर करवटें बदलते रहते यानी अब दोनों को शक होने लगा था कि दूसरा भी उसी चीज़ को खोज रहा है और इस शक से उनकी आपसी ख़ामोशी और भी गहरी होती चली गयी अगर कोई उन्हें मिलने आ टपकता तो वे कोई बात न कर पाते दोनों की कोशिश होती कि दूसरे को बैठक में बैठा छोड़ जल्दी से दूसरे कमरों की तलाशी ले आये और उनके दोस्त अब अक्सर उन्हें छेड़ते कहते तुम इतने चुप चुप क्यों रहने लगे हो ख़ैरियत तो है ख़ानाजंगी तो नहीं हो रही और वे इन मज़ाक़ों पर मुनासिब तरीक़े से मुस्कुरा भी न पाते और अब कभी कभी एक दूसरे की उलट पलट की हुई चीज़ों को लेकर उनमें तकरार हो जाती उनका आपसी शक आंखों तक उमड़ आता और अब आलमारियों और दरवाज़ों के पाट चौपट खुले रहने लगे सूटकेस इधर उधर बिखरे रहते बिस्तर बैठक और कुर्सियां उखड़ी हुई रहतीं किताबें उलटी सीधी लेटी रहतीं कोटों की जीभें बाहर निकली रहतीं दराजों के जबड़े खुले रहते कालीनों में त्यूरियां पड़ी रहतीं कपड़े पांवों से उलझते रहते जूते एक दूसरे पर सवार रहते बरतन ठोकरें खाते रहते महसूस होता घर में से अभी अभी कोई चोर या तूफ़ान होकर गुज़रा हो लेकिन अब वह न शिकायत करते न एक दूसरे के शक की परवाह अब दोनों एक दूसरे को अकेले होने के अवसर जुटाते अक्सर होता यह कि आदमी एक कमरे की छानबीन कर रहा होता औरत दूसरे कमरे की और एक दिन आदमी ने औरत को या शायद औरत ने आदमी को—सुविधा के लिए मान लिया जाये कि औरत ने आदमी को—अंधेरी सीढ़ियों में सिकुड़े हुए किसी चीज़ की ओर एकटक देखते हुए देख लिया कुछ क्षण वह ख़ामोश खड़ी रही और जब वह झुककर उस चीज़ को उठा ही रहा था तो वह धीमे से बोली मिल गयी क्या और आदमी चौंक कर सीधा हो गया लेकिन उसकी एक मुट्ठी बंद देख औरत ने झपटकर उसे अपनी उत्सुक अंगुलियों से खोल दिया और आदमी की हिलती हुई हथेली पर मैली रस्सी

का एक कसमसाता सांप देख दीवानावार हंस उठी और आदमी ने एड़ियां उठाकर उस रस्सी को इतने ज़ोर से ज़मीन पर दे मारा जैसे कोई गंदा गिलास तोड़ रहा हो औरत के होंठ उसके दांतों पर मिसट आये और उनकी तलाश का नया दौर शुरू हो गया जिसमें घर होने पर वे मकान को आपस में बांट लेते और खौलती हुई ख़ामोशी में डूबे अपने अपने हिस्से की तलाशी लेते रहते थक जाते तो रुककर बैठ एक दूसरे की आंखों में झांकते मानो वहां भी उसी चीज़ को ढूंढ़ रहे हों फिर उठकर एक दूसरे की गर्द झाड़ते और तलाश दोबारा शुरू हो जाती अंधेरा हो जाने पर सारी बत्तियां एक साथ जला दी जातीं बल्ब नंगे कर दिये जाते और घर रात भर आग सा जगमगाता रहता और दिन भर उनकी आंखों में अंगारे दमकते रहते उन्हें महसूस होता जैसे एक मुद्दत से वे किसी वीराने में भटक रहे हों अब कभी तो वे सारे सामान को संवारकर करीने से टिका देते और उघड़ी हुई आंखों से ख़ाली कोनों में झांकते और कभी सब कुछ समेटकर एक जगह ढेर लगा देते और फिर उस ढेर को उधेड़ना शुरू कर देते कभी उन्हें विश्वास हो जाता कि अब वह चीज़ उन्हें मिलेगी नहीं और तब उनकी आंखें खुली क़ब्रों सी दिखायी देने लगतीं लेकिन वह इस विश्वास को ज़्यादा देर ज़िंदा न रहने देते सोचते मिलेगी कैसे नहीं अगर थी तो यहीं कहीं होगी और उनकी आंखें फिर बेताब हो उठतीं और अब अक्सर उनके यहां कोई आता न वे किसी के यहां जाते लेकिन अगर कहीं जाना ज़रूरी हो जाता तो उनमें से एक कोई बहाना बनाकर पीछे रह जाता और दूसरा उसी बहाने के सहारे जल्दी घर लौट आता और उनमें से जो जितनी देर घर से बाहर होता गुमसुम सा रहता और अचानक सबके सामने अपनी ज़ेबों या बटुए की तलाशी लेने लगता या खड़ा होकर अपने कपड़े झाड़ने लगता दूसरे हैरान होते और इस तरह आहिस्ता आहिस्ता बात फैलने लगी कि उन दोनों को किसी लाइलाज वहम ने दबोच लिया है और अब वे अक्सर अपने अपने काम से ग़ैरहाज़िर रहने लगे और जब जाते भी तो खोये खोये से उसी चीज़ के बारे में सोचते रहते और काम यूंही पड़ा रहता किसी से कोई बात करते न आंख मिलाते और अब दूसरे भी उन्हें दूर से ही देखकर इधर उधर हो जाते और दूसरों के बीच होने पर भी वे अकेले और अपने आप में लिपटे से रहने लगे हत्ताकि एक दिन उन्हें नौकरी से भी एक साथ जवाब मिल गया और उनका सारा समय उसी चीज़ की तलाश में सर्फ़ होने लगा अभी तक उनकी तलाश मकान तक ही सीमित रही थी अब अक्सर उनमें से एक मकान के भीतर भटक रहा होता तो दूसरा बाहर लॉन को लताड़ रहा होता हमसाये हैरान होते लेकिन कोई आगे बढ़कर पूछने की हिम्मत न करता अब आदमी की दाढ़ी बढ़ी रहती और औरत के बाल बिखरे रहते दोनों के चेहरों पर हवाइयां उड़ती रहतीं उनकी आंखें हमेशा नीचे को झुकी रहतीं कपड़े मुचड़े रहते और कमरे क़रीब क़रीब कुबड़ी और फिर कभी कभी वे मकान से दूर उन रास्तों और गलियों में

रेंगते हुए नज़र आने लगे जहां पहले वे सैर पर या किसी काम से जाया करते थे कि अब उन्हें शक हो चला था कि ज़रूरी नहीं कि वह चीज़ घर में या मकान के आसपास ही गुम हुई हो और अब आवारा बच्चों की टोलियां उनका पीछा करने लगीं क्योंकि अफ़वाह फैल चुकी थी कि वे दोनों बिलकुल बावले हो गये थे और उनकी तलाश का आख़िरी दौर तब शुरू हुआ जब एक रोज़ आदमी ने औरत से या शायद औरत ने आदमी से—सुविधा के लिए मान लिया जाये कि औरत ने आदमी से—कहा कि ज़रूरी नहीं वह चीज़ गुम ही हुई हो चोरी भी तो हो सकती है और उस दिन से इधर उधर देखने के अलावा वे अक्सर अपने पुराने दोस्तों वाक़िफ़ों रिश्तेदारों सहयोगियों के घरों में चोरी छिपे घुसने की कोशिश में रहते हैं कई बार पकड़े जा चुके हैं कई बार पिट भी चुके हैं लेकिन वे बाज़ नहीं आते और जब उनसे पूछा जाता है कि वे क्या ढूंढ़ रहे हैं तो वे कुछ बता नहीं पाते कि अब हालत यह हो गयी है कि उन्हें उस चीज़ का नाम तक याद नहीं और जब वे उसे बयान करने की कोशिश करते हैं तो उनके मुंह से सिवाय कुछ मोहमल आवाज़ों के कुछ नहीं निकलता जिससे शायद यही अंदाज़ा लगाया जायेगा कि वह चीज़ शायद कभी उनके पास थी ही नहीं लेकिन उनकी तलाश जारी है हालांकि अब कोशिश यह की जा रही है कि किसी रोज़ उन्हें पकड़कर किसी पागलख़ाने में डाल आया जाये देखिए क्या होता है···

[सारिका, जुलाई, 1971]